नील की खेती और चम्पारण आन्दोलन

अनुप कुमार

ब्रिटेन में वस्त्र उद्योग की रंगाई कार्य में नील का व्यापक उपयोग होता था, इसलिए नील की खेती पर बंगाल एवं बिहार में अंग्रेजों द्वारा काफी जोर दिया जाता था। अन्य रंगों की अपेक्षा नीला रंग का प्रकृति में आसानी से मिलना मुश्किल था, इसलिए नीला रंग देने वाली पौधों पर सबकी नजर टिक गई थी, चाहे वह व्यापारी हो या शोषण करने वाले हो। नील की खेती से किसानों की स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। विदित है कि नील की खेती से मिट्टी की ऊर्वरा शक्ति घटती है। फसल चक्र पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। नील की खेती बिहार के चम्पारण क्षेत्र में होती रही है। दुनिया की मांग का एक बड़ा भाग चम्पारण में पैदा होता था और इसका सारा लाभ नील की खेती करने वाले किसानों को नहीं, बल्कि खेती कराने वाले निलहों को जाता था।

चम्पारण सत्याग्रह भारत का प्रथम अहिंसक सफल आंदोलन था। इससे चम्पारण के किसानों में आत्मविश्वास जगा और अन्याय के प्रति लड़ने के लिए उनमें एक नई शक्ति का संचार हुआ। महात्मा गाँधी के नेतृत्व के प्रति जन साधारण की आस्था सैलाब का शुरूआत चम्पारण सत्याग्रह से ही हुआ।